January-February-March-2023 E-ISSN – 2348-7143

International Research Fellows Association's

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Vol. 9, Issue-4

## Multidisciplinary Issue

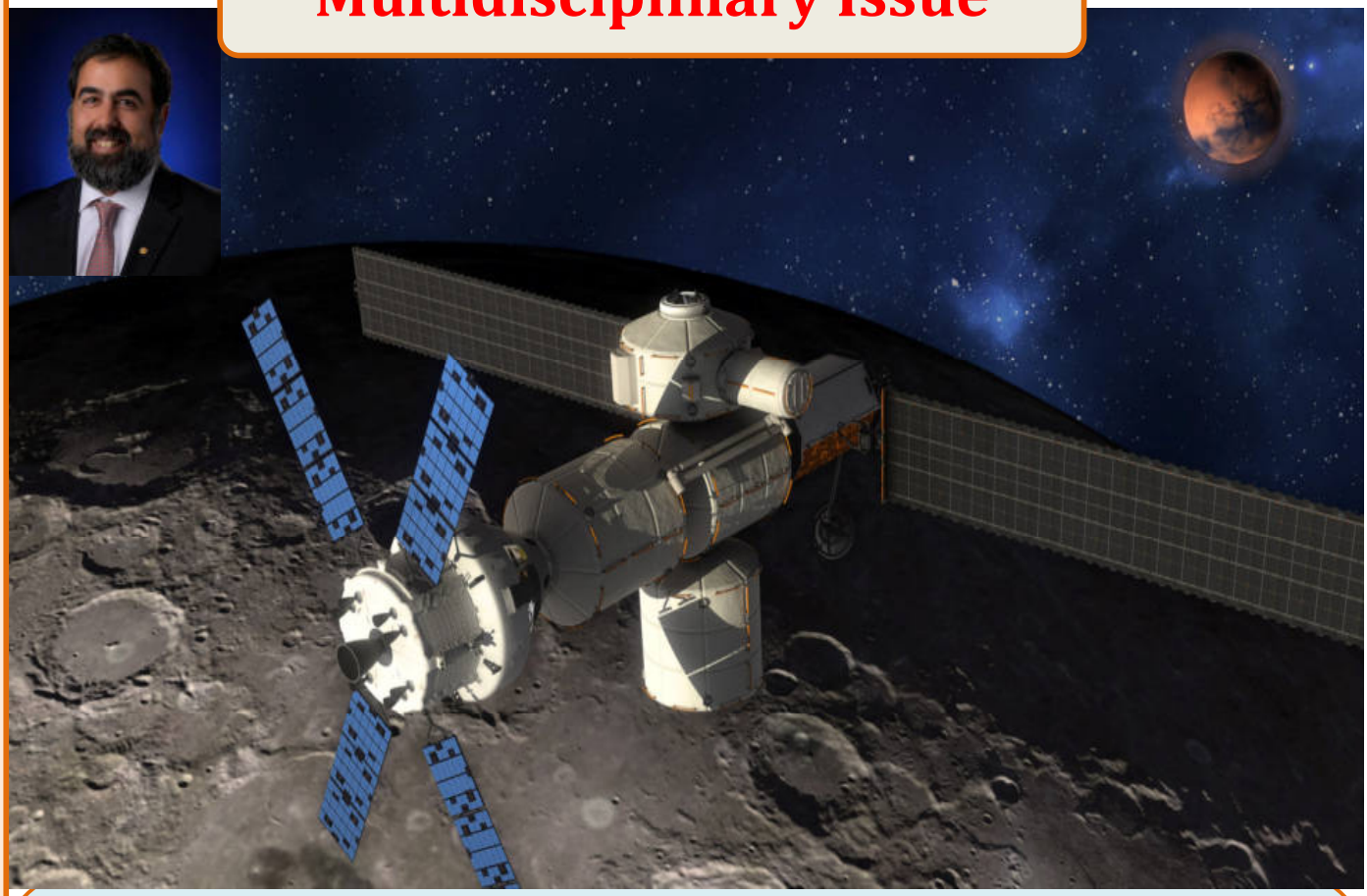

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's M.S.G. Arts, Science & Commerce College,
Malegaon (Camp), Dist – Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

# INDEX


| No. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| | **English Section** | | |
| 1 | Species of the Myxomycetes Recorded from Patnadevi Forest Dist. Jalgaon, Maharashtra (India) | **N. V. Chimankar** | 05 |
| 2 | A Study of Women's Marginalized Desires with reference to the Short Stories of Githa Hariharan and Kate Chopin | **Dr. Vidya Verma, Dr. Yogita Verma** | 10 |
| 3 | Diaspora Literature and Methods of Writings | **Dr. Waman Jawanjal** | 15 |
| 4 | Cultural Impact and Reception of the Television Series Dexter in Indian and Western Society | **Dr. Ashish Pandey** | 20 |
| 5 | A Study of Spirituality among Male and Female College Student | **Dr. Kalpana Vitore** | 26 |
| 6 | How the COVID-19 Challenges become the Opportunities for Sustainable Entrepreneurship. | **Babli Jha, Manisha Bhosale** | 29 |
| 7 | E-Library as Learning Resources | **Mr. Lalit Sonawane, Dr. Anil Chaudhari** | 34 |
| 8 | Socio-Legal Issues of Cyber Security in India | **Dr. N. D. Jadhav** | 39 |
| | **हिंदी विभाग** | | |
| 9 | महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में पशु-पक्षियों का स्थान | **डॉ. सरोज सोलंकी** | 44 |
| 10 | अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में चित्रित ग्रामिण मजदूर | **डॉ. भिमराव मानकरे** | 46 |
| 11 | भंगी दरवाजा उपन्यास में समकालीन राजनीति का चित्रण | **डॉ. अशोक पवार** | 51 |
| 12 | 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव | **डॉ. सरला तुपे** | 54 |
| 13 | जाति के अहं ने मानवता का गला घोट दिया | **प्रा. हिरा पोटकुले** | 59 |
| 14 | स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में लक्ष्मण का चरित्रांकन | **डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी** | 63 |
| 15 | सुरजपाल चौहान के काव्य में डॉ. आंबेडकर के विचार | **डॉ. अशोक पवार** | 66 |
| 16 | २१ वीं सदी की हिंदी भाषा पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव | **डॉ. सूरज चौगुले** | 70 |
| | **मराठी विभाग** | | |
| 17 | साहित्याची संस्कृती आणि संस्कृतीचे साहित्य | **डॉ. अनमोल शेंडे** | 75 |
| 18 | लोकनाट्य तमाशा : संकल्पना व स्वरूप | **डॉ.नितीन मोटे** | 80 |
| 19 | भाऊ पाध्ये आणि भालचंद्र नेमाडे यांच्या कादंबरीतील साम्य-भेद याचा शोध | **सुहास पाटील** | 86 |
| 20 | संत तुकाराम महाराज व राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज यांच्या साहित्यातील श्रममुल्यांची जाणीव | **डॉ. मनोज ढोणे** | 93 |
| 21 | समकालीन मराठी कविता | **डॉ. विजय केसकर** | 98 |
| 22 | 'महानिर्वाण' : निर्वाणाचे हास्य-शोकात्मक नाट्य | **डॉ. नितीन मोटे** | 107 |
| 23 | डॉ. अनिल अवचट यांच्या लेखनाची वाङ्.मयीन गुणवत्ता | **डॉ. किरण सालोटकर** | 112 |
| 24 | २१ व्या शतकातील मराठी ग्रामीण कादंबरीतील शेतकरी: समाज व संस्कृती | **डॉ. आप्पा माने** | 118 |
| 25 | ग्रामीण व्यवस्थेतील दलित स्त्रीचे शोषण – राघववेळ | **डॉ. राजेंद्र करनकाळ** | 123 |
| 26 | वसुंधरा पटवर्धन यांचे नाट्यलेखन | **डॉ. चंद्रकांत कांबळे** | 127 |
| 27 | वैचारिक लेखन : संकल्पना स्वरूप आणि वाटचाल | **प्रा. उज्वला लांडगे** | 132 |

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Vol.9, Issue – 4 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan.-Mar.-2023

# जाति के अहं ने मानवता का गला घोट दिया

**प्रा. हिरा पोटकुले**
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय शिवाजीनगर,गढी तह.गेवराई,
जि.बीड potkuleh@gmail.com mob.8888980517

साहित्य और सामाजिक जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य किसी भी धर्म, जाति या वर्ग का साहित्य नहीं है अपितु समस्त मानवता की अभिव्यक्ति, लेखा–जोखा करनेवाला साहित्य है। जिसमें सामाजिक चेतना, समाज जीवन, सामाजिक परिवेश के साथ बदलते चित्र, संदर्भों का अंकन होता है। रमणिका गुप्ता एक ऐसी लेखिका है जिसके कथनी और करनी में अंतर दिखाई नहीं देता। बहुमुखी प्रतिभा की धनी रमणिका गुप्ता जी ने कविता, उपन्यास, कहानी लेखन के साथ–साथ समीक्षात्मक पुस्तकों का भी लेखन किया है। दलित, उपेक्षित, शोषित, आदिवासी नारी उनके लेखन के केंद्र में रही है। उन्होंने अपने साहित्य में दलित, उपेक्षित, आदिवासी, गरीब और स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई है। 'दाग दिया सच' कहानी में दलितों के वास्तविक जीवन, उनकी यातना, पीडा और उनकी जो उपेक्षा हुई है उसका चित्रण किया है। भारतीय समाज व्यवस्था का एक घिनौना सच यहाँ पर पनप चुकी जातीयता का है। इस व्यवस्था में कानून के रक्षक भी जमीनदार, बडी जातवालों के गुलाम बन गए हैं। सवर्णों की छद्म प्रगतिशीलता, नकली व बनावटी आधुनिकता पर व्यंग्य करते हुए दलितों के गरीबी के नासूर को उसकी पूरी बदसूरती के साथ इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हिंदी दलित साहित्य लेखन में प्रेमचंद, निराला, यशपाल प्रमुख कहानीकार है और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात मार्कंडेय, अमरकांत, राजेंद्र यादव, नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रेम कपाड़िया, डॉ.दयानंद बटोही, डॉ. तेज सिंह, बाबूलाल खंडा, रामचंद, उषा चंद्रा,रमणिका गुप्ता, रजत रानी 'मीनू', सुभद्रा कुमारी आदि प्रमुख कथाकार है। इन सभी कथाकारों ने धर्म से पीडित, समाज द्वारा उपेक्षित, गाव के सीमांत पर फेंका गया तथा कथित अछूत समाज रोजी–रोटी, कपड़ा, मकान के लिए जद्दोजहद करता हुआ मजदूर वर्ग तथा तमाम सुविधाओं से उपेक्षित और युगों से पद दलित अमानवीय स्थितियों में जीने के लिए बाध्य, अभिशप्त समाज का चित्रण किया है।

हिंदी साहित्य जगत में दलित लेखन की सुपरिचित लेखिका रमणिका गुप्ता द्वारा लिखित 'दाग दिया सच' कहानी में नायक दलित युवक महावीर और ऊंची जाति कुर्मी समाज की लड़की मालती की प्रेम कहानी है। दोनों भी एक दूसरे पर जान छिड़कते हैं। बचपन से ही गावं, एक ही गली में पले–बढ़े महावीर और मालती एक दूसरे के प्रेम बंधन में बंध जाते हैं और एक दूसरे को अपना जीवनसाथी के रूप में देखते हैं। दोनों साथ जीने–मरने की कसमें खाते हैं। महावीर के पिता धोकर रविदास है जो कोलयरी में नौकरी करते हैं। उन्होंने अपने बेटे को पढ़ाया और महावीर भी मैट्रिक में अच्छे नंबर से पास हुआ। महावीर की ताशा पार्टी है जिसमें उसके कुर्मी समाज के दोस्त भी ढोल ताशा बजाते हैं। मालती के पिता बुधन कुर्मी है जो कोलयरी में नौकरी करते हैं। धोकर और बुधन अच्छे दोस्त हैं। महावीर के पिता धोकर और मालती के पिता बुधन को महावीर और मालती के प्रेम में कोई आपत्ति नहीं है। दोनों परिवारों को मालती और महावीर के प्रेम संबंधों पर कोई आपत्ति नहीं है। दोनों परिवारों का मानना है कि अब जमाना बदल गया है लड़का–लड़की पढ़े लिखे हैं दोनों के विचार मिलते हैं तो परिवार को इस पर कोई आपत्ति नहीं है।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था का एक घिनौना सच है जातीयता का अहं। तत्कालीन और वर्तमान समाज में जाति व्यवस्था ने मानवता को दीमक की तरह अंदर–ही–अंदर खोखला बना दिया है। गांव के लोग जो अपने आप को छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज मानते हैं उन्हें महावीर और मालती के प्रेम संबंध आपत्ती है। उन्हे यह मान्य नहीं है की गांव में लगभग चार सौ कुर्मी जाति के घर होने के बावजूद चमार जाति के लड़के से प्रेम किया, जिससे कुर्मी समाज के लड़कों के अहं को ठेंस पहुंचती हैं और इन दोनों का प्रेम बर्दाश्त नहीं कर पाते। यह लड़के यह बात पंचायत के मुखिया को बताते हैं और मुखिया मालती के पिता को हिदायत देता है कि दस दिन के अंदर मालती का विवाह किसी कुर्मी लड़के के साथ कर दे नहीं तो हम तुम्हें जाति से निकाल देंगे। मुखिया बुधन को डांटता है, ''क्या मरजी है। बेटी चमार के साथ ब्याहनी है क्या? बिरादरी में रहना है या नहीं? दस दिन के अंदर ब्याह कर दो इसका लड़का खोज के, नहीं तो हम से बुरा और कोई नहीं होगा। बिरादरी की इज्जत बरबाद करवा रहे हो– दोस्त है तो दोस्त–सा रहे, समधी तो नहीं बन सकता ना वह तुम्हारा। मालती का घर से निकलना बंद कर दो। फिर दोनों को साथ देखा तो जिंदा गाड़ देंगे जमीन में।''(१)

मुखिया के डांट से मालती के पिता घबरा जाते हैं। वह गिड़गिड़ा कर अपनी हालात को मुखिया के सामने रखता है। बुधन की बातों से समाज में प्रचलित कुप्रथा दहेज का रुप स्पष्ट हो जाता है। बुधन गिडगिडाया– ''इतनी जल्दी कैसे 'कुटुंब' मिलतै बाबु! फिर धोकर का बेटा भी तो लायके ही है। के देखे हैं आजकल जात–पात। हमर पास पैसा–कौड़ी भी तो नाय है। आजकल जात वाला सब जो कोलयरी की नौकरी पाया गया है मोटरसाइकिल और टी.वी. मांगे हैं– हमारे पास कहां से आएगी, हमर डिश (पास)कहां से इतनी रकम आवेगी। आप सब भी तो कोई तैयारी न है हमर घर शादी करे खातर। हमर घर पर खपड़ा भी पूरा नहीं है– तुरंत कैसे सब जुगाड़ होतै? ''(२) गरीबी दलित समाज की हो या किसी भी समाज की सबसे बड़ा कलंक है। मालती के पिता के विचार अच्छे हैं लेकिन निर्धनता ने उसे मजबूर बना दिया है। बुधन पर जात वाले इतना दबाव डालते हैं कि, कर्ज करके, जमीन बेचकर कंवारा लड़का ना मिले तो अवैध खोज ले या फिर कोई बुतरु मिल जाए तो ब्याह दे। तब बुधन मजबूरन अपनी सुंदर बिटिया मालती का अनमेल विवाह करने की बात सोचता है।

मालती का महावीर से मिलना बंद कर दिया जाता है। मालती को यह अनमेल विवाह मंजूर नहीं है। वह केवल महावीर से विवाह करना चाहती है। मालती रोती–बिलखती अपने माता–पिता को समझाती है लेकिन वह मजबूर है। वह जात पंचायत के खिलाफ नहीं जा सकते। मालती के घर में उसका रिश्ता पक्का हो रहा है और मालती चुपके से महावीर के कमरे में चली जाती है। इससे महावीर डर जाता है लेकिन मालती महावीर को हिम्मत और कसम देकर मना लेती है। दोनों गांव से भाग कर शादी कर लेते है। इस घटना पर गाव में जात पंचायत होती है। इसके लिए बुधन और धोकर रविदास को पाच–पाच हजार और एक–एक क्विंटल चावल–दाल का जुर्माना भरना पड़ता है। जात पंचायत यह निर्णय लेती है महावीर–मालती जहां–कहां है उन्हें गांव में लाना होगा, नहीं तो धोकर का परिवार खत्म कर दिया जाएगा। महावीर के छोटी बहन के साथ कुर्मी लड़कों द्वारा उल्टा– सीधा करने की धमकी दी जाती है। धोकर के पूरे परिवार को बांध दिया जाता है। उनकी आठ साल की बच्ची को भी पकड़कर छप्पर के खूंटे से बांध दिया जाता है। इससे धोकर का परिवार डर जाता है। धोकर गिडगिडाकर पंचायत को कहता है कि हम कुछ नहीं जानते पर उन पर विश्वास नहीं किया जाता।

मजबूरन मालती और महावीर को परिवार की खातिर वापस गांव आना पड़ता है। गांव आने पर मालती को गांव वालों द्वारा जलील किया जाता है। पंचायत वाले धमकाकर मालती से पूछते हैं कि 'तुझे महावीर भगा कर ले गया था न? कुर्मी लड़के भी अपनी भड़ास निकालना चाहते हैं, तू जानती नहीं है क्या महावीर चमार है छोटी जाति का है। हम सब में से किसी को तूने क्यों नहीं चुना? तब मालती खुद की सच्चाई और गांव का चाल– चलन बताती है ''नहीं हम ही उकरा के कहे रहे कि हमरा लेके भाग चल। हम अपने मन से गए रहे। हम बुतरु से ब्याह नहीं करेंगे।''...'' जात–पात आज के माने है? तोहनी भी तो छोट जात की औरत के रखनी रख लिए हो। मोहना तो ब्याहता औरत के भगा के ले आया है। हमर के महावीर अच्छा लगे हैं हम उकरा संग ब्याह करलै है। प्यार जबरन थोड़े होत हैं कि हम तोहनी में से चुन लेती किसी को।''(३) मालती का यह सच पूरी पंचायत और गांव वाले पचा नहीं पा रहे थे। चार सौ घर वाली बस्ती की लड़की दस घर की बस्ती का सच बोल रही है यह कैसे हो सकता है। कहते हैं कि प्यार अंधा होता है, प्यार में और युद्ध में सब कुछ माफ होता है किंतु तमाम अंधेपन के बावजूद प्यार जाति को देख ही लेता है। कुर्मी समाज का लडका मालती की हिम्मत, धीरज और मालती की सच्चाई को दाग देता है। ''अर्जुन जलती हुई लुकाठी लेकर उठा और मालती की साडी खींचकर नंगा कर उसकी जांघ में दाग दिया।''ले ई महावीर के...ले! यह लुकाठी तोहर सबक सिखायब।'' और उसने दाग दी मालती की कोख... मालती का सच...औरत का सच. ..!''(४) मालती बेहोश हो गई, उसकी मां उसके ऊपर गिर गई। डर रही थी बेचारी भीतर ही भीतर जोर से रो भी नहीं सकी। अत: पूरे गांव वालों के सामने गांव का एक लड़का गांव की बेटी को सबके सामने निर्वस्त्र करता है और सारे लोग देखते हैं। क्या आज की आधुनिकता, वैचारिकता, प्रगतिशीलता मात्र कपड़ों की तरह पहनी, बदली और फेंकी जा सकने वाली अवधारणा है।

स्वयं को उच्चभ्रू समझने वाले समाज में अपने ही गांव की लड़की के साथ घिनौना व्यवहार किया जाता है तो दूसरी और अपनी जाति से उच्च जाति के लड़के से प्यार करने की इस प्रकार सजा दी जाती है। ''खत्म कर दो इस चमरवा को। ऐसी सजा दो कि फिर कोई कुर्मी लड़की की तरफ नजर न उठा सके दूसर जात।'' दोनों हाथ–पाव दो खूंटो से बांधकर महावीर को बैठा दिया गया था। एक बड़ा सा पत्थर लेकर दौड़ा था नकुल महतो उसकी तरफ!... बात खत्म भी ना हुई थी कि अर्जुन ने पीछे से आकर एक बड़ा–सा पत्थर महावीर के सिर पर दे मारा। महावीर चीख भी नहीं सका। फिर पत्थरों से महावीर का चेहरा कुच–कुचकर उसे मार डाला गया। बस वह अपने पांव और हाथ पटकते रहा जब तक प्राण रहे।'' (५) महावीर की देह को पत्थरों से मारकर चिथडा–चिथडा कर दिया। पूरा परिवार रोता रहा, गिडगिडाता रहा लेकिन किसी ने नहीं सुना। रात भर लाश पड़ी रही महावीर की। सब ने जश्न मनाया। पत्थर से कूचने वाला उस रात नायक बन गया था पूरी जमात का। उच्च जाति के वीर योद्धा– एक निहत्थे को मारकर, एक बंधे हुए को कुचल कर,फूले न समा रहे थे। एक निहत्थे को मारकर उनकी इज्जत बच गई थी। एक बाप बेटे की लाश को घर ले जाने के लिए गिड़गिड़ा रहा रात भर। बस रो रही थी महावीर की मां जोर–जोर से । जवान बेटे की ऐसी मौत देखकर एक बाप पगला गया।

गांव हो या शहर दलित कहानी हमेशा शोषण के परतों को उधेडती है। 'दाग दिया सच' कहानी अनेक सवालों को उठाती है और यह सच्चाई बताती है कि तमाम भौतिक तरक्की के बावजूद हम आज भी पिछड़े, दकियानूस ही है। तमाम प्रगतिशीलता के बावजूद यह समाज जाति को नहीं छोड़ना चाहता। लेखिका ने यह सवाल खडे किये है कि चमार के बेटे को मारने वाली जात पंचायत के लोग मनुष्य थे? अपने गांव की बेटी

को सबके सामने निर्वस्त्र करने वाले और देखनेवाले जिंदा इंसान थे ? उनमें मनुष्यता का कोई अंश शेष था? वे तो जानवर भी नहीं थे वे केवल जाति थे।

यह कहानी सवर्णों की छद्म गतिशीलता और बनावटी व नकली आधुनिकता पर तिखा व्यंग करती है क्योंकि ऐसी घटनाएं आज भी हमारे समाज में घटित होती दिखाई देती है। इस कहानी को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि तथाकथित सवर्ण और प्रगतिशील तबका मानसिक रोगी है। लेखिका अपने अनुभवों से समझ पाई है, कि भारत में जाति एक सच्चाई है जिसे भूल कर कोई भी लड़ाई लड़ी तो जा सकती है लेकिन जीती नहीं जा सकती। लेखिकाने न केवल साहित्यिक धरातल पर बल्कि राजनीतिक धरातल पर इस मुद्दे को बहस का रुप प्रदान करने का प्रयास किया है। आज यदि इंटरकास्ट मैरिज हो रही है तो वह तथाकथित उच्च जाति में ही। गांव के लोग आज भी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। वर्तमान समय में भारतीय समाज में इस तरह मनुष्यता की, मानवता की हानी आए दिन बढ़ते हुए देखने को, सुनने को, पढ़ने को मिलती है। कब होगा जातीय पागलपन का अंत? कब होगा करोड़ों लोगों के मन से डर का खात्मा– कब महावीर और मालती मुक्त घूमेंगे स्वच्छंद किसी रोक–टोक बिना? रमणिका गुप्ता के इस कहानी में आक्रोश और विद्रोह का स्वर मुखर है। विश्वास है कि प्रस्तुत कहानी में दलित वर्ग के ऊपर उठाए गए प्रश्नों को समझने में पाठकों की मदद होगी।

**संदर्भ:**

1. दाग दिया सच – रमणीका गुप्ता, कथा द्वादशी संपादक,हिंदी अध्ययनमंडळ डॉ.बा.आं.म.वि.औ.बाद पृ.१९२२
2. दाग दिया सच – रमणीका गुप्ता, कथा द्वादशी संपादक, हिंदी अध्ययन मंडळ डॉ.बा.आं.म.वि.औ.बाद पृ १९२
3. दाग दिया सच –रमणीका गुप्ता, कथा द्वादशी संपादक, हिंदी अध्ययन मंडळ डॉ.बा.आं.म.वि.औ.बाद पृ.१९७४
4. दाग दिया सच – रमणीका गुप्ता, कथा द्वादशी संपादक, हिंदीअध्ययन मंडळ डॉ.बा.आं.म.वि.औ.बाद पृ.१९८५.
5. दाग दिया सच – रमणीका गुप्ता, कथा द्वादशी संपादक, हिंदी अध्ययन मंडळ डॉ.बा.आं.म.वि.औ.बाद पृ.१९८